DR. K. S. RAJANNA

Dr. K. S. Rajanna himself a Divyang having lost both his hands and feet in his childhood, is known for his works for the welfare of persons with disabilities.

2. Born on 6th December, 1959 in village Koppa in Mandya District, Dr. Rajanna studied SSLC and Diploma in Mechanical Engineering. His ability to engage in activities like Writing, Walking, Running, Swimming and floating on water for hours together, driving four-wheelers and riding two wheelers defies the limitations imposed by his physical condition.Braving all odds up against him, he has made spectacular achievements in various fields like Social Work, Sports, Arts, Industry, Administration and Justice. His life is an inspiration to all.

3. Dr. Rajanna is an acclaimed artist in various forms of art. He won first prize in the State Level painting competition organized by the State of Karnataka in the year around 1971-72. He, in 1980 established M/s. Shine Disabled Industries under self-employment scheme through which he provided employment to around 500 persons, majority being disabled persons, and given skill development training to around thousands of poor and disabled persons. He also guided and helped them to avail entitled benefits from the Government to start their own industries for self- employment and to lead independent and respectable life.

4. As the first and only disabled person to hold the position of State Commissioner for Persons with Disabilities in the history of Karnataka, Dr. Rajanna has been instrumental in enacting and executing policies that promoted inclusivity and accessibility for Divyangs. This has markedly created a Divyang- Friendly atmosphere and improved the lives of Divyang people in the state. He has represented India in International Paralympics in 2002 held in Kuala Lumpur, Malaysia and earned Gold Medal in Athletic Discus Throw and Silver Medal in Swimming and made the country proud. He is an ardent social worker, tirelessly advocating the welfare of marginalized communities and working relentlessly to ensure that they receive benefits they are entitled to.

5. Dr. Rajanna is the recipient of numerous awards and honours. The Government of India conferred on him "National Award" for the Welfare of Persons with Disabilities in 2003. The Karnataka Government conferred on him "Kannada Rajyotsava Award" for achievements in various fields in 2020. In 2000, the Karnataka Government conferred on him "State Award" for social work and Industrialist. Bengaluru Mahanagara Palike conferred on him "Kempegowda Award" for sports in 2003 and was awarded "Karnataka Vishwakarma Ratna" by Karnataka State Vishwakarma Mahamandala in 2014. In 2016, his name was entered in "Limca Book of Records" by Coca-Cola India and South-West Asia. He has been conferred Honorary Doctorate by Indian Virtual University for Peace and Education in 2017. He received Honorary felicitation award by Akhila Bharatha Kannada Sahitya Parishat in 2023. He received the Sevaa Dharmik Award by Chaitanya Social Cultural Organization Telangana in 2014. He was awarded the Prerana Puraskara award by Jolle Group of Employment Examba in 2013.

डॉ. के. एस. राजन्ना

डॉ. के. एस. राजन्ना दिव्यांगों के कल्याणार्थ कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं। वह स्वयं भी एक दिव्यांग हैं और बचपन में पोलियो के कारण उनके दोनों हाथ–पैर बेकार हो गए थे।

2. 6 दिसंबर, 1959 को मांड्या जिले के कोप्पा गांव में जन्मे डॉ. राजन्ना ने एसएसएलसी और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा की पढ़ाई की। लिखने, चलने, दौड़ने, तैरने और घंटों पानी पर तैरते रहने, चार पहिया और दोपहिया वाहन चलाने जैसे काम कर सकने की उनकी क्षमता ने उनकी शारीरिक सीमाओं पर विजय प्राप्त कर ली है। सभी बाधाओं का सामना करते हुए, उन्होंने सामाजिक कार्य, खेल, कला, उद्योग, प्रशासन और न्याय जैसे विभिन्न क्षेत्रों में शानदार उपलब्धियां हासिल की हैं। उनका जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी है।

3. डॉ. राजन्ना विभिन्न क्षेत्रों के कलाकार के रूप में प्रशंसा प्राप्त हैं। उन्होंने वर्ष 1971–72 के आसपास कर्नाटक राज्य द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने 1980 में स्वरोजगार योजना के तहत मैसर्स शाइन डिसेबल्ड इंडस्ट्रीज की स्थापना की, जिसके माध्यम से उन्होंने लगभग 500 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया, जिनमें से अधिकांश दिव्यांग थे। उन्होंने हजारों गरीब और विकलांग व्यक्तियों को कौशल विकास प्रशिक्षण दिया और उन्हें सरकार से उचित लाभ प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन और मदद भी की, ताकि वे स्वरोजगार हेतु अपना स्वयं का उद्योग शुरू कर सकें और सम्मानजनक जीवन जी सकें।

4. कर्नाटक के इतिहास में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राज्य आयुक्त का पद संभालने वाले पहले और एकमात्र दिव्यांग के रूप में, डॉ. राजन्ना ने दिव्यांगों के लिए समावेशन और पहुंच बढ़ाने वाली नीतियों के लिए कानून बनाने और उन्हें लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे राज्य में दिव्यांग अनुकूल माहौल तैयार हुआ है और दिव्यांग लोगों के जीवन में सुधार हुआ है। उन्होंने 2002 में कुआलालाम्पुर, मलेशिया में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पैरालंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया और एथलेटिक डिस्कस थ्रो में स्वर्ण पदक और तैराकी में रजत पदक जीता और देश को गौरवान्वित किया। वह एक उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जो वंचित समुदायों के कल्याण हेतु अनवरत और अथक प्रयास करते हैं, ताकि उन्हें वे लाभ मिल सकें जिनके वे हकदार हैं।

5. डॉ. राजन्ना को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। भारत सरकार ने 2003 में उन्हें दिव्यांगों के कल्याण के लिए "राष्ट्रीय पुरस्कार" से सम्मानित किया। कर्नाटक सरकार ने उन्हें 2020 में विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों के लिए "कन्नड़ राज्योत्सव पुरस्कार" से सम्मानित किया। वर्ष 2000 में, कर्नाटक सरकार ने उन्हें सामाजिक कार्य और उद्योग जगत में उनकी उपलब्धियों के लिए "राज्य पुरस्कार" प्रदान किया। बेंगलुरु महानगर पालिके ने उन्हें 2003 में खेल के लिए "केम्पेगौड़ा पुरस्कार" से सम्मानित किया। कर्नाटक राज्य विश्वकर्मा महामंडल ने 2014 में उन्हें "कर्नाटक विश्वकर्मा रत्न" पुरस्कार प्रदान किया। कोका–कोला इंडिया और दक्षिण–पश्चिम एशिया द्वारा 2016 में, उनका नाम "लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स" में शामिल किया गया। इंडियन वर्चुअल यूनिवर्सिटी फॉर पीस एंड एजुकेशन द्वारा उन्हें 2017 में मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया है। अखिल भारत कन्नड़ साहित्य परिषद द्वारा 2023 में उन्हें मानद सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया। चैतन्य सामाजिक सांस्कृतिक संगठन तेलंगाना द्वारा 2014 में उन्हें सेवा धार्मिक पुरस्कार प्रदान किया गया। जोले ग्रुप ऑफ एम्प्लॉयमेंट एक्जम्बा द्वारा 2013 में उन्हें प्रेरणा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।